

नौकरी की किताब

सत्र 22: भगवान का भाषण 2, बेहेमोथ और लेविथान

और अय्यूब की प्रतिक्रिया (अय्यूब 40.6-41.34)

जॉन वाल्टन द्वारा

यह जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 22, परमेश्वर का भाषण 2, बेहेमोथ और लेविथान, और अय्यूब की प्रतिक्रिया, अय्यूब 40:6-41:34 है।

भगवान की वाणी 2 का परिचय [00:31-1:12]

अब हम अंततः यहोवा के दूसरे भाषण पर पहुँचते हैं। हम मनुष्यों की अज्ञानता से आगे बढ़कर वास्तव में इस विचार को प्राप्त करने जा रहे हैं कि लोगों को कैसे सोचना चाहिए। यह दिलचस्प है कि पुस्तक का यह मूल संदेश पुस्तक के उस हिस्से में है जिसे सबसे दुर्गम, सबसे भ्रमित करने वाला माना गया है, और मूल रूप से, लोग बस अपने हाथ ऊपर कर देते हैं और कहते हैं कि उन्हें नहीं पता कि इसके साथ क्या करना है। फिर भी, इसमें सटीक रूप से बताया गया है कि किताब हमें कैसे सोचना चाहती है। हम इसके साथ कुछ मजा करने जा रहे हैं।

यहोवा बोलता है [1:12-2:31]

चलो एक नज़र मारें। इसकी शुरुआत तब होती है जब भगवान अध्याय 40 के छठे छंद में अपना दूसरा भाषण प्रस्तुत करते हैं। और फिर, यहोवा तूफान के बीच से बोलते हैं। यहां याद रखें, यदि मैंने इसका उल्लेख नहीं किया है, तो यहोवा बोल रहा है। यह एलोहिम नहीं है। यह शादाई नहीं है। यह अडोनाई नहीं है। यह यहोवा बोल रहा है। प्रस्तावना में हमारे पास यहोवा थे, और अब अंत में हमारे पास यहोवा के भाषण हैं। फिर, यह हमें एक इज़राइली एहसास देता है। अय्यूब ने एल शदाई के बारे में बात की है, लेकिन यह यहोवा ही है जो स्पष्टीकरण देने आया है। और इसलिए, यह दिलचस्प है कि यहोवा बोल रहा है।

तो, हमने अय्यूब को इस संबोधन में उनकी पहली कुछ पंक्तियाँ पढ़ीं, "अपने आप को एक आदमी की तरह संभालो; मैं तुमसे सवाल करूंगा, और तुम मुझे जवाब दोगे" [40:7]। निःसंदेह, अय्यूब ही

प्रश्न पूछने वाला था। अय्यूब ही मांगें कर रहा है। अय्यूब यहोवा की चुप्पी से निपटने की कोशिश कर रहा है। और अब यहोवा उत्तर देने नहीं आता; वह सवाल करने आ रहा है।

तो, अय्यूब के पास अपने सभी प्रश्न थे, और अब, ऐसा कहा जा सकता है, मेज पर कोई भी प्रश्न नहीं बचा है। अय्यूब ने अपना हाथ अपने मुँह पर रख लिया है। तो, उसने अपने प्रश्न पूछना समाप्त कर दिया है। अब यहोवा उससे प्रश्न करेगा।

अय्यूब द्वारा परमेश्वर के न्याय पर प्रश्न उठाना [2:31-4:37]

श्लोक आठ बहुत महत्वपूर्ण है। वह कहता है, "क्या आप मेरे न्याय को बदनाम करेंगे? क्या आप खुद को सही ठहराने के लिए मेरी निंदा करेंगे?" तब हम देख सकते हैं कि यदि अय्यूब के भाषणों में यह स्पष्ट नहीं हुआ है, तो हम देख सकते हैं कि अय्यूब ने परमेश्वर के न्याय पर प्रश्न उठाया है।

यहोवा स्वयं ऐसा कहता है। तो फिर, हमें याद दिलाया गया है कि अय्यूब ने परमेश्वर की प्रतिष्ठा के साथ न्याय नहीं किया है। जो कुछ भी घटित हुआ, अय्यूब ने उस पर अच्छी प्रतिक्रिया नहीं दी।

अय्यूब ने परमेश्वर के प्रति अच्छी भावना व्यक्त नहीं की है। तो, यहाँ यह बिल्कुल स्पष्ट कर दिया गया है। और अब परमेश्वर जो करता है वह अय्यूब को चुनौती देता है। "क्या तेरे पास परमेश्वर के समान भुजा है, क्या तेरी वाणी उसके समान गरज सकती है? अपने आप को महिमा और महिमा से सजाओ, और अपने आप को सम्मान और ऐश्वर्य का वस्त्र पहनाओ। अपने क्रोध की आग

भड़काओ।" यह ऐसा है मानो यहोवा कह रहा हो, "ठीक है, अय्यूब, एक दिन के लिए भगवान बनने की कोशिश करो। क्या तुम सच में सोचते हो कि तुम्हें यह पता चल गया है कि यह कैसे काम करता है? खैर, चलो देखते हैं कि यह सब कितनी अच्छी तरह काम करता है।" श्लोक 12, "जितने घमण्डी हैं उन सब पर दृष्टि करके उनको नम्र करो; दुष्टों को जहां वे खड़े हों, वहीं से कुचल डालो।" क्या आपको लगता है कि व्यवस्था इसी तरह काम करती है, न्याय एक बुनियाद के रूप में? वह कहते हैं, "यह देखने लायक होगा कि क्या आप वास्तव में इसे पूरा कर सकते हैं।"

लेकिन अब वह अपना ध्यान दो प्राणियों, बेहेमोथ और लेविथान पर केंद्रित करता है। उसने अय्यूब को अपनी धार्मिकता, अय्यूब की धार्मिकता, को परमेश्वर के न्याय पर सवाल उठाने का आधार मानने के लिए फटकारा। वह दुनिया पर न्याय थोपने की अय्यूब की क्षमता को अलंकारिक रूप से

चुनौती देता है, है ना? अय्यूब सोचता है कि ईश्वर यही करता है--प्रतिशोध सिद्धांत। ईश्वर ने अय्यूब को दुनिया पर न्याय थोपने की चुनौती दी।

बेहेमोथ और लेविथान की पहचान [4:37-5:44]

और इसलिए, लोगों की वांछित मुद्रा को संबोधित करने के लिए, उन्होंने बेहेमोथ और लेविथान इन पात्रों का परिचय दिया। आइए उनकी पहचान के बारे में बात करके शुरुआत करें। वे न तो ज्ञात प्राकृतिक प्रजातियाँ हैं और न ही अब विलुप्त हो चुकी हैं। मैं इसके बारे में अधिक विस्तार में नहीं जा रहा हूँ, लेकिन जब हम इन प्राणियों की विशेषताओं की जाँच करते हैं तो यह वास्तव में बहुत स्पष्ट हो जाता है। वे हमारे द्वारा ज्ञात किसी भी चीज़ से मेल नहीं खाते हैं। लेविथान में जिस तत्व का किसी भी जैविक या विलुप्त प्रजाति से मिलान करना सबसे कठिन है, वह है आग में सांस लेना। हम वास्तव में किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानते जो ऐसा करता हो, किसी प्राणी को जो ऐसा करता हो। और इसलिए, उस अर्थ में, हमें कहीं और देखना होगा।

अराजक जीव [5:44-11:07]

मेरा प्रस्ताव है कि वे अराजक प्राणी हैं। अराजक जीव प्राचीन निकट पूर्व में एक प्रसिद्ध श्रेणी हैं और प्राचीन दर्शकों द्वारा बहुत आसानी से पहचाने जाने योग्य हैं। वे अराजक प्राणियों के बारे में ठीक-ठीक जानते हैं। लेविथान एक ज्ञात अराजक प्राणी है, न केवल हिब्रू बाइबिल में अन्य स्थानों पर बल्कि उगारिटिक ग्रंथों में भी।

अराजक जीव सीमांत प्राणी हैं जो व्यवस्थित दुनिया की परिधि पर मौजूद होते हैं, लगभग एक पैर और एक पैर बाहर की तरह। वे सर्वोत्कृष्ट प्राणी हैं जिनकी अमूर्त विशेषताएं ज्ञात जानवरों द्वारा साझा की जाती हैं। यह विचार कि कुछ लोगों ने बेहेमोथ में दरियाई घोड़े की कुछ झलक या लेविथान में मगरमच्छ की कुछ झलक देखी है, केवल इतना ही बताता है कि दरियाई घोड़ा या मगरमच्छ, एक तरह से बेहेमोथ या लेविथान की संतान होगी। उनके दल और यह नहीं कि बेहेमोथ वास्तव में एक दरियाई घोड़ा है या कि लेविथान वास्तव में एक मगरमच्छ है।

अराजक प्राणियों की श्रेणी, जैसा कि मैंने कहा, किनारे पर रहने वाले सीमांत प्राणियों से आबाद है, जैसे कि कोयोट या उल्लू या शतुरमुर्ग या लकड़बग्घा, साथ ही डरावने जानवर जो केवल कल्पना

की आँखों में देखे जाते हैं। दोनों प्रकार अराजक प्राणियों की इस श्रेणी में हैं। बाद वाला समूह, ये डरावने जानवर, पूरी तरह से प्राणीशास्त्रीय नहीं हैं। वास्तव में, वे अक्सर मिश्रित प्राणी होते हैं। तो, शेर का सिर, बाज के पंख, ग्रिफ़िन जैसे या स्फिंक्स जैसे जीव। और इसलिए, अराजक प्राणी अक्सर मिश्रित होते हैं, लेकिन हमेशा नहीं।

अराजक प्राणियों को भगवान द्वारा बनाया गया माना जाता है। हम इसे विशेष रूप से उत्पत्ति 1, महान समुद्री जीवों और 1:21 में देखते हैं। लेकिन वे गैर-ऑर्डर जारी रखने की क्षमता का प्रतिनिधित्व करते हैं, जैसे कि बगीचे के बाहर कम ऑर्डर वाले क्षेत्र में कांटे और थिसल। कांटे और थीसल गैर-व्यवस्था का प्रमाण हैं, फिर भी वे आंशिक रूप से व्यवस्थित दुनिया में हैं।

जब भजन 104 में भगवान लेविथान के बारे में बात करते हैं, तो उन्होंने लेविथान को उसके साथ खेलने के लिए बनाया। जब उत्पत्ति 1:21 में बड़े समुद्री जीवों का उल्लेख किया गया है तो वे परमेश्वर की रचना का हिस्सा हैं। वास्तव में, उत्पत्ति वापस आती है और " *बारा*" शब्द का उपयोग उत्पत्ति 1 में पहली बार श्लोक 1 के बाद से इसे विशेष रूप से समुद्री राक्षसों से जोड़ने के लिए करती है, बस यह स्पष्ट करने के लिए कि वे भी आदेशित का हिस्सा हैं प्रणाली। इसलिए, एक अर्थ में, हम उन्हें ब्रह्मांड-विरोधी प्राणी कह सकते हैं। वे एक तरह से ब्रह्मांड के विरुद्ध काम करते हैं, लेकिन वे सख्ती से गैर-आदेश के दायरे में नहीं हैं। वे व्यवस्थित दुनिया का हिस्सा हैं, लेकिन वे अपने नासमझ स्वभाव के कारण गैर-व्यवस्था के एजेंट के रूप में काम करते हैं। अराजक प्राणी नैतिक रूप से बुरे नहीं होते हैं, लेकिन वे गंभीर नुकसान पहुंचा सकते हैं क्योंकि वे सिर्फ अपनी प्रवृत्ति से काम करते हैं।

तो, एक अर्थ में, हम तुलना कर सकते हैं कि हम बवंडर के बारे में कैसे सोच सकते हैं। यह नैतिक रूप से बुरा नहीं है, लेकिन यह गंभीर नुकसान पहुंचा सकता है क्योंकि यह वही करता है जो बवंडर करता है। तो फिर, अराजक जीव ईश्वर के दुश्मन नहीं हैं, लेकिन वे मनुष्यों के बीच तबाही मचा सकते हैं।

जिस प्रकार समुद्र गैर-व्यवस्था के दायरे में है, उसी प्रकार इसकी सीमा निर्धारित करके इसे ईश्वर द्वारा नियंत्रित किया जाता है। ये जीव किसी भी दृष्टि से पालतू नहीं हैं। फिर भी वे परमेश्वर के नियंत्रण में हैं।

बेहेमोथ वास्तव में "मवेशी" शब्द का बहुवचन है, और यह कल्पना करने योग्य सबसे शक्तिशाली भूमि जानवर को संदर्भित करता है। यह एक प्रकार से भूमि के जानवरों का अमूर्तन है।

लेविथान सबसे शक्तिशाली समुद्री जीव होगा जिसकी कल्पना की जा सकती है। और इसलिए, पाठ अराजक प्राणियों को चित्रित करने के लिए इनका उपयोग करता है। और फिर, दरियाई घोड़ा और मगरमच्छ निश्चित रूप से खतरनाक हैं, और उन्हें आम तौर पर इन जैसे अराजक प्राणियों के अंडे या अनुचर माना जा सकता है।

साहित्यिक पात्रों के रूप में बेहेमोथ और लेविथान की भूमिका [11:07-12:06]

अब, यह कहने के बाद, हमें यह पहचानना चाहिए कि प्राणियों की पहचान उनकी साहित्यिक भूमिका को पहचानने जितनी महत्वपूर्ण नहीं है जितनी कि पुस्तक में पात्रों की है। प्राचीन दर्शकों ने बेहेमोथ और लेविथान को पहचान लिया होगा। उनसे उनकी पहचान जुड़ी होगी। लेकिन इसके बावजूद, पुस्तक के लेखक द्वारा बेहेमोथ और लेविथान को पात्रों, साहित्यिक पात्रों के रूप में उपयोग किया जा रहा है जिनकी पुस्तक में एक भूमिका और एक उद्देश्य है। यदि हम इन साहित्यिक पात्रों का उपयोग करके पुस्तक के आधिकारिक संदेश को समझने जा रहे हैं, तो हमें पहचान के विवादों से परे देखना होगा कि उनका उपयोग कैसे किया जाता है।

नौकरी में अन्यत्र अराजक जीव [12:06-14:08]

पुस्तक में कई अवसरों पर अराजक प्राणियों का उल्लेख किया गया है। तो, किताब पढ़ते हुए, हम उन्हें पहले ही देख चुके हैं। अध्याय तीन में अय्यूब का विलाप 3:8 में उन लोगों के बारे में बताया गया जो लेविथान से मुकाबला करने के लिए तैयार थे। एलीपज को अय्यूब की पहली प्रतिक्रिया में पूछा गया कि परमेश्वर उसके साथ अराजक प्राणी के रूप में व्यवहार क्यों कर रहा है। वह 7:12 में है। वहां वह हिब्रू शब्द *तैनिम का उपयोग करता है*, जो उत्पत्ति 1:21 में वही हिब्रू शब्द है। अय्यूब को ऐसा लगता है जैसे उसके साथ एक अराजक प्राणी के रूप में व्यवहार किया जा रहा है क्योंकि

भगवान उसे सुरक्षा में रख रहा है। अब यह प्राचीन निकट पूर्व में हम जो जानते हैं, उससे मेल खाता है। प्राचीन निकट पूर्व में देवताओं को आंशिक रूप से पालतू जानवरों को पट्टे पर रखने और उन्हें अपने उद्देश्यों के लिए उपयोग करने के लिए जाना जाता था, भले ही वे गैर-आदेश के इस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते थे। तो, अध्याय 30, श्लोक 15 से 23 में अय्यूब सुझाव देता है कि ईश्वर स्वयं एक अराजक प्राणी की तरह कार्य कर रहा है।

परमेश्वर अय्यूब के साथ एक अराजक प्राणी के रूप में व्यवहार नहीं कर रहा है, जितना कि वह अय्यूब से बेहेमोथ की भूमिका में आने के लिए कह रहा है। ईश्वर किसी अराजक प्राणी की तरह कार्य नहीं कर रहा है। इसके बजाय, वह लेविथान से कहीं बेहतर है और उसे उसी रूप में पहचाना जाना चाहिए। मेरा मानना है कि अब यह परिचय दे रहा है कि पाठ में बेहेमोथ और लेविथान का उपयोग कैसे किया जा रहा है। फिर से, अय्यूब ने ईश्वर पर अराजक प्राणी की तरह कार्य करने का आरोप लगाया है, और ईश्वर कहते हैं, "ओह, नहीं, यह उससे भी बदतर है। यह उससे भी बड़ा है।" और इसलिए, जैसा कि हम देखते हैं कि जो कहा जा रहा है, हम उसे समझाएंगे। हमें बेहेमोथ और लेविथान का विश्लेषण उनकी पहचान के लिए नहीं बल्कि उनकी साहित्यिक भूमिका के लिए करने की आवश्यकता है।

बेहेमोथ और अय्यूब की तुलना [14:08-16:08]

इसलिए, जब हम अध्याय 40, पद 15 खोलते हैं, तो परमेश्वर अय्यूब का ध्यान बेहेमोथ की ओर निर्देशित करता है। "बेहेमोथ को देखो," और फिर अगली पंक्ति पर ध्यान दो। "बेहेमोथ को देखो, जिसे मैं ने तुम्हारे साथ मिलकर बनाया है।" अय्यूब और बेहेमोथ को एक साथ समूहीकृत किया गया है। भगवान ने दोनों को बनाया है। यह दिलचस्प है कि जब हम बेहेमोथ से संबंधित उस संक्षिप्त खंड को देखते हैं, तो यह श्लोक 24, फिर 15 से 24 तक जाता है। यहोवा न तो अय्यूब के बारे में और न ही स्वयं बेहेमोथ के लिए कुछ भी करने की बात करता है। श्लोक 15 में, बेहेमोथ संतुष्ट और पोषित है, जैसा कि अय्यूब था। आपको याद है 15 ने तुलना प्रस्तुत की थी। इसलिए, बेहेमोथ अय्यूब की तरह संतुष्ट और पोषित है। 16 से 18 में, परमेश्वर ने बेहेमोथ को वैसे ही मजबूत बनाया जैसे उसने अय्यूब को बनाया था। 40 आयत 19 में, बेहेमोथ अपनी तरह के लोगों में पहले स्थान पर है, जैसा कि

अय्यूब करता है। इसकी पहचान 15 :7 में की गई थी। पद 20 में, बेहेमोथ की देखभाल की जाती है, जैसे अय्यूब की थी। अध्याय 40 के 21 से 22 में, बेहेमोथ को अय्यूब की तरह आश्रय दिया गया है। 23 में, अब यह 23 और 24 में परिवर्तन करना शुरू कर रहा है, जो बेहेमोथ खंड का अंत है। 23 में, बेहेमोथ उग्र नदी से चिंतित नहीं है। अनुमान या निहितार्थ बल्कि है, और न ही आपको होना चाहिए। वह भरोसा करता है और सुरक्षित है, जैसा आपको होना चाहिए। उसे पकड़ा या फंसाया नहीं जा सकता, जिसके प्रति आपको भी अजेय होना चाहिए और खुद को प्रतिरोधी दिखाना चाहिए। श्लोक 24 इस बारे में बात करता है "क्या कोई उसे आँखों से पकड़ सकता है, या फँसा सकता है और उसकी नाक छेद सकता है?" "नाक" शब्द क्रोध का शब्द है। " और छेदा नहीं जा सकता" यह पाठ में एक कठिन शब्द है; इसका अर्थ कभी-कभी "नामांकित" या "नामित" या "प्रवेशित" होता है। तो फिर, विचार यहाँ है जिसके प्रति आपको अजेय होना चाहिए।

बेहेमोथ की तुलना अय्यूब से की जा रही है। इसका परिचय ठीक पहले श्लोक में दिया गया है। उसके बाद हम बेहेमोथ के बारे में जो कुछ भी पढ़ते हैं, हमें उसकी तुलना अय्यूब से करनी चाहिए। इस प्रकार यह अनुभाग कार्य कर रहा है। तो अय्यूब को बेहेमोथ जैसा होना चाहिए। याद रखें अय्यूब ने शिकायत की थी, "आप मेरे साथ एक अराजक प्राणी की तरह व्यवहार कर रहे हैं।" यहाँ, भाषण में कहा गया है, "ठीक है, आपको इस संबंध में थोड़ा अधिक अराजक प्राणी की तरह होना चाहिए।" हम उस पर वापस आएंगे।

यहोवा लेविथान से भी महान है [16:08-22:44]

आइए लेविथान की ओर मुड़ें। एक लंबा अनुभाग, और आइए फिर से इस पर ध्यान दें कि यह क्या कहता है और क्या नहीं कहता है। पहले आठ छंद दूसरे व्यक्ति रूप का उपयोग करते हैं। "क्या आप यह कर सकते हैं? क्या आप वह कर सकते हैं?" दूसरे व्यक्ति के रूप में है। इस बात पर ध्यान केंद्रित करना कि अय्यूब लेविथान के साथ क्या कर सकता है और क्या नहीं।

थोड़े से के साथ, मैं इस विचार के बारे में थोड़ा से अधिक सोचता हूँ: यदि आप लेविथान के साथ ये चीजें नहीं कर सकते हैं, तो उसे मछली के कांटे से खींच लें, उसकी जीभ को बांध दें, उसकी नाक के माध्यम से एक रस्सी डाल दें, ठीक है। क्या यह दया की भीख मांगेगा? क्या यह आपके साथ

नरमी बरतेगा? क्या आप इसके साथ कोई समझौता कर सकते हैं? क्या आप इसका एक पालतू जानवर बना सकते हैं? यदि आप लेविथान के साथ ऐसा नहीं करेंगे, तो आप यहोवा के साथ ऐसा करने की अपेक्षा क्यों करेंगे? आप उसे फंसाने की उम्मीद क्यों करेंगे? उसकी जुबान बंद करो, उसके साथ एक समझौता करो और उसे पालतू बनाओ। आप ऐसा क्यों करेंगे?

दूसरे व्यक्ति पर स्विच करने से पता चलता है कि लेविथान की तुलना यहोवा से की जानी है। तो, 41:3, "क्या यह आपसे दया की भीख मांगता रहेगा?" अय्यूब एक तरह से यही चाहता था कि परमेश्वर ऐसा करे। श्लोक 10 और 11, "कोई भी इतना उग्र नहीं है कि उसे भड़का सके। फिर कौन मेरे विरुद्ध खड़ा हो सकता है? मुझ पर किसका दावा है कि मुझे भुगतान करना होगा?" यहोवा स्वयं अपने और लेविथान के बीच संबंध बनाता है। इतना नहीं कि वह लेविथान जैसा है, बल्कि इसलिए कि वह लेविथान से बहुत बड़ा है। यदि आप लेविथान के प्रति इस तरह से कार्य नहीं कर सकते, तो आप क्यों सोचेंगे कि आप यहोवा के प्रति इस तरह से कार्य कर सकते हैं?

यह खंड कभी भी इस बारे में बात नहीं करता है कि भगवान लेविथान के साथ क्या करता है। फिर भी बहुत सारे व्याख्याकार उस दिशा में चले गए हैं। यह लेविथान पर यहोवा के नियंत्रण के बारे में बात नहीं करता है। यह यहोवा द्वारा लेविथान को पराजित करने के बारे में बात नहीं करता है। हमारे यहां एक अलग तरह का बयान दिया जा रहा है।

अध्याय 41 में, जैसे ही हम इस जानकारी के माध्यम से आगे बढ़ते हैं, लेविथान को नियंत्रित नहीं किया जा सकता है, और न ही यहोवा को। लेविथान समर्पण नहीं करेगा या दया की भीख नहीं मांगेगा; यहोवा भी नहीं करेगा। लेविथान को घायल या वश में नहीं किया जा सकता। उसके विरुद्ध संघर्ष करना निराशाजनक है। यहोवा के लिए भी यही सच है।

हमने 10 और 11 में स्पष्ट तुलना पढ़ी; तुम्हारे समेत किसी का भी मेरे खिलाफ़ दावा नहीं है, अय्यूब। 12 से 18 में, आप लगाम पाने के लिए उसका मुंह जबरदस्ती नहीं खोल सकते। क्या हमें वह मिलता है? अय्यूब क्या करने का प्रयास कर रहा है? वह यहोवा का दोहन करने और उस पर लगाम लगाने की कोशिश कर रहा है। यहोवा को नियंत्रित या पालतू नहीं बनाया जा सकता। वह वश में नहीं है।

19 से 25 तक, क्रोधित होने पर लेविथान खतरनाक होता है, जैसे यहोवा है। 26 से 32 तक, लेविथान

अजेय है, जैसे यहोवा है। श्लोक 33, कोई भी प्राणी उसके बराबर नहीं है। निस्संदेह, इसका तात्पर्य यह है कि अय्यूब लेविथान के बराबर नहीं है, यहोवा के बराबर होने की बात तो दूर की बात है। पद 34 लेविथान उन सब पर प्रभुता करता है जो घमंडी हैं। इसकी तुलना 11 से 14 में इस भाषण की शुरुआत से करें, जहां भगवान अय्यूब से कहते हैं, तुम्हें पता है, अपने आप को हथियारबंद करो, जो बुरे हैं उन पर हावी हो जाओ। यह लेविथान है जो उन सभी पर हावी है जो घमंडी हैं। अध्याय 40, श्लोक 11 और 12 में अय्यूब घमंडी को नीचा नहीं दिखा सकता। न ही वह घमंडी पर राजा को वश में कर सकता है, 41:34। ईश्वर उस अर्थ में अभिमानियों का राजा भी है। वह उन पर शासन करता है। यह सब चर्चा करता है कि अय्यूब लेविथान के साथ क्या नहीं कर सकता। ये ऐसी चीज़ें भी हैं जो अय्यूब को सीखनी चाहिए जो वह यहोवा के साथ नहीं कर सकता। तो, अय्यूब को क्या सीखना चाहिए, और यह वही है जो हम सभी को सीखना चाहिए, हम ईश्वर को पालतू नहीं बना सकते।

पुस्तक के संदेश में अराजक प्राणियों की भूमिका [22:44-24:19]

तो, पुस्तक के संदेश में इन प्राणियों की भूमिका, सबसे पहले, उन्हें लौकिक बुराई के अवतार के रूप में चित्रित नहीं किया गया है। एक दुभाषिया ने तो यह भी सुझाव दिया है कि वे पुस्तक की शुरुआत में चैलेंजर के समकक्ष हैं। मैं इसे इसके लगभग बिल्कुल विपरीत रूप में देखता हूं। किसी भी प्राणी को दुष्ट के रूप में वर्णित नहीं किया गया है, न ही प्राणी *हसतन*, *चुनौती देने वाले* का प्रतिनिधित्व करता है, और न ही वे शुरुआती अध्यायों से चुनौती देने वाले की भूमिका या स्थिति लेते हैं। उनका वर्णन इस तरह से नहीं किया गया है कि वे दुनिया में व्यवस्था के लिए खतरों को वश में करने और लौकिक न्याय लाने की ईश्वर की क्षमता के प्रमाण के रूप में काम कर सकें। पाठ उनके साथ वैसा व्यवहार नहीं करता है। यह उन्हें उस तरह से प्रस्तुत नहीं करता है।

ईश्वर द्वारा उन्हें वश में करने का कोई संदर्भ नहीं है। तो, वे ईश्वर को वश में करने, आदेश न देने की गवाही के रूप में कैसे खड़े हो सकते हैं? हमें पाठ में जो कहा गया है उसके अनुरूप चलना होगा। लौकिक न्याय न तो अधर में लटका हुआ है और न ही यहोवा जो करने को कहा गया है उसका परिणाम है। पुस्तक इस बात पर जोर नहीं देती है कि ईश्वर संपूर्ण ब्रह्मांड या मानवीय अनुभव के

लिए न्याय लाता है। किताब यह दावा नहीं करती. यही वह दावा है जो अय्यूब और उसके दोस्त प्रतिशोध सिद्धांत के माध्यम से करना चाहते थे।

न्याय के बारे में नहीं [24:19-24:52]

यहोवा के पहले भाषण ने संकेत दिया कि अय्यूब को कैसे नहीं सोचना चाहिए। दूसरा भाषण इंगित करता है कि अय्यूब को कैसे सोचना चाहिए। किसी भी भाषण में यहोवा अय्यूब की धार्मिकता या उसके स्वयं के न्याय को संबोधित नहीं करता है। इसमें एक स्पष्ट संदेश के सबसे करीब है, जो कि हम यहोवा के चरम भाषण में अपेक्षा करते हैं।

इंसानों को बेहेमोथ की तरह भरोसा करना चाहिए [24:52-25:47]

बेहेमोथ के संबंध में बताई गई बात बढ़ते पानी में इसकी स्थिरता से संबंधित है। बेहेमोथ धर्मी नहीं है। लेविथान बस नहीं है। बेहेमोथ को स्थानांतरित नहीं किया जा सकता। लेविथान को चुनौती नहीं दी जा सकती। यहोवा उन्हें पराजित नहीं करता या उन पर अपनी श्रेष्ठता दिखाने के लिए उनका दोहन नहीं करता। इनका उपयोग चित्रण के रूप में किया जाता है जिससे मनुष्य कुछ महत्वपूर्ण सबक सीख सकते हैं। मनुष्यों को उफनती नदियों का जवाब सुरक्षा और विश्वास के साथ देना चाहिए, जैसा कि बेहेमोथ इस साहित्यिक प्रस्तुति में करता है।

मनुष्यों को यह नहीं सोचना चाहिए कि वे यहोवा को वश में कर सकते हैं या उसे चुनौती दे सकते हैं क्योंकि वे लेविथान को चुनौती या वश में नहीं कर सकते हैं, जो यहोवा से हीन है।

मनुष्य लेविथान या ईश्वर को वश में नहीं कर सकता; अय्यूब की प्रतिक्रिया [25:47-27:10]

अध्याय 42 में अय्यूब की दूसरी प्रतिक्रिया, श्लोक दो से छह तक, दर्शाती है कि वह यहोवा द्वारा बताए गए बिंदुओं को समझता है। मैं इसे जल्दी से पढ़ूंगा. "मैं जानता हूँ कि तुम सब कुछ कर सकते हो, तुम्हारा कोई भी उद्देश्य विफल नहीं हो सकता।" फिर, इसका मतलब यह है कि अय्यूब उसे वश में नहीं कर सकता या अय्यूब के अपने उद्देश्यों के लिए उसे पालतू नहीं बना सकता।

"आपने पूछा, 'यह कौन है जो बिना ज्ञान के मेरी योजनाओं को अस्पष्ट कर देता है?'" यहां भगवान की योजनाओं को अस्पष्ट करने पर ध्यान दें; अय्यूब ने ईश्वर की योजनाओं को अस्पष्ट कर दिया

क्योंकि उसने संकेत दिया कि ईश्वर की योजनाएँ ब्रह्मांड को न्याय के अनुसार व्यवस्थित करने के लिए प्रतिशोध सिद्धांत को लागू करने की थीं। यह परमेश्वर की योजनाओं को संबोधित करता है। जो ज्ञान के बिना परमेश्वर की योजनाओं को अस्पष्ट करता है। "निश्चित रूप से मैंने उन चीज़ों के बारे में बात की जो मुझे समझ में नहीं आई, वे चीज़ें मेरे लिए जानने के लिए बहुत अद्भुत थीं।"

आश्चर्यजनक बात यह है कि मूलतः यह मानव वेतन ग्रेड से परे है। आप इसे समझ नहीं सकते।

नौकरी वापस लेना और जमा करना [27:10-30:47]

"तू ने कहा, 'अब सुनो, और मैं बोलूंगा; मैं तुझ से प्रश्न करूंगा, और तू मुझे उत्तर देगा।' मेरे कानों ने तेरा समाचार सुना था, परन्तु अब मेरी आंखों ने तुझे देखा है। इस कारण मैं अपने आप को तुच्छ जानता हूँ, और धूल और राख में मन फिराता हूँ। फिर से, मेरे लिए, इससे पता चलता है कि वह स्वीकार करता है कि जो कुछ उसने सोचा था कि वह जानता था, उसमें वह अभिमानपूर्ण था। वह मुकर जाता है, और वह समर्पण कर देता है। यह उनकी पहली प्रतिक्रिया की तरह नहीं है जहां उन्होंने कहा था, मेरी बात खत्म हो गई है। वह मुकर जाता है, और वह समर्पण कर देता है। यहाँ हिब्रू शब्द "मेरे लिए बहुत अद्भुत " के लिए है, ऐसी बातें जो मैं नहीं जानता था। हिब्रू शब्द *पेले क्रातात्पर्य* दैवीय क्षेत्र की उस जानकारी से है जो मानवीय समझ से परे है।

"पश्चाताप" शब्द पर। आइए इसके बारे में थोड़ा बताएं। यह श्लोक छह में है, "धूल और राख में पश्चाताप करो।" यह क्रिया का निफल रूप है। यह अन्य शब्दों से अलग है जिसका अनुवाद "पश्चाताप" के रूप में किया जा सकता है। एलीपज ने उससे पश्चाताप करने का आग्रह किया था। वह शब्द था *शूव*, पीछे मुड़ना, दिशा बदलना, अपना व्यवहार बदलना। यहां अय्यूब व्यवहार परिवर्तन का सुझाव नहीं देता बल्कि अपने पिछले बयानों को वापस लेना चाहता है। वह उसी मौखिक रूप का उपयोग करता है जिसका उपयोग निर्गमन 32:14, यिर्मयाह 4:28, यिर्मयाह 18:10, जोएल 2:13, और योना 3:10 जैसे स्थानों में तब किया जाता है जब परमेश्वर अपना मन बदलता है। इसलिए, सभी दिलचस्प अंश, दुर्भाग्य से, हम संबोधित करने में समय नहीं बिता सकते। इसकी कई घटनाएँ पछतावे वाली स्थितियों में घटित होती हैं। यह खेद की अभिव्यक्ति है। अय्यूब के बयानों में, उसे अपने पिछले बयानों पर पछतावा है। ईश्वर का उनका चरित्र-चित्रण उनकी अपनी

समझ, उनकी अहंकारी चुनौतियों पर एक अभिमानपूर्ण विश्वास है। इस तरह हम अय्यूब के पछतावे को समझेंगे।

यहां दिया गया बयान अन्य मुद्दों को भी खोलता है। जब यहां पूर्वसर्ग 'अल' के साथ प्रयोग किया जाता है, तो इसका मतलब आम तौर पर किसी चीज़ पर पुनर्विचार करना या, अधिक बार, किसी चीज़ को दिमाग से बाहर निकालना, उसके बारे में सब कुछ भूल जाना होता है। इस कविता में, हम सुझाव दे सकते हैं कि यह कुछ ऐसा है जिसे वह अपने दिमाग से निकाल देता है। यह धूल और राख है; यह यही कहता है। यह कहता है, ठीक है, यह कहता है, "संबंधित पश्चाताप" --' अल। इसलिए, वह इस धूल और राख को अपने दिमाग से निकाल देता है। यह धूल और राख से पश्चाताप नहीं है। वह यहाँ पूर्वसर्ग नहीं है। बल्कि, वह पूरी धूल और राख वाली बात पर पुनर्विचार करता है, और वह धूल और राख को अपने दिमाग से निकाल देता है। इसलिए उन्होंने अपने शोक की समाप्ति की घोषणा की है, और उन्होंने अपनी वास्तविकता को स्वीकार कर लिया है।

बेहेमोथ और लेविथान का महत्व [30:47-31:29]

तब हम देख सकते हैं कि बेहेमोथ और लेविथान पुस्तक को आकार देने में अत्यंत महत्वपूर्ण पात्र हैं। यह दरियाई घोड़े और मगरमच्छ के बारे में नहीं है। यह डायनासोर के बारे में नहीं है। यह इस बारे में नहीं है कि हम पौराणिक कथाओं या उस प्रकार की चीज़ों के बारे में बात कर रहे हैं। यह वास्तव में अराजक प्राणियों के बारे में भी नहीं है, हालांकि वे हैं। यह इस बारे में है कि इन प्राणियों को कैसे चित्रित किया जाता है और यह अय्यूब और किताब पढ़ने वाले हम सभी के लिए एक संदेश के रूप में कैसे खड़ा होता है। और जैसे ही हम अन्य खंडों की ओर बढ़ेंगे हम उन मुद्दों का समाधान करेंगे।

यह जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 22, परमेश्वर का भाषण 2, बेहेमोथ और लेविथान, और अय्यूब की प्रतिक्रिया, अय्यूब 40:6-41:34 है। [31:29]